



Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 04 दिसंबर, 2020

राष्ट्रीय प्रदूषण नयितरण दविस

भारत में प्रत्येक वर्ष 02 दिसंबर को राष्ट्रीय प्रदूषण नयितरण दविस के रूप में मनाया जाता है। इस दविस के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य औद्योगिक आपदाओं के प्रबंधन और नयितरण पर जागरूकता फैलाना और औद्योगिक अथवा मानवीय गतिविधियों के कारण उत्पन्न होने वाले प्रदूषण को रोकने की दशा में प्रयासों को बढ़ावा देना है। यह दविस उन लोगों की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने 2-3 दिसंबर, 1984 की रात को भोपाल गैस त्रासदी में अपनी जान गँवा दी थी। दरअसल 2 दिसंबर, 1984 की रात को अमेरिकी कंपनी यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड (मौजूदा नाम-डाउ केमिकल्स) के प्लांट से मथाइल आइसोसाइनाइट (Methyl Isocyanate) गैस का रिसाव हुआ था, जिसने भोपाल शहर को एक विशाल गैस चैंबर में परिवर्तित कर दिया था। कम-से-कम 30 टन मथाइल आइसोसाइनाइट गैस के रिसाव के कारण तकरीबन 15,000 से अधिक लोगों की मृत्यु हो गई थी और लाखों लोग इस भयावह त्रासदी से प्रभावित हुए थे। यही कारण है कि भोपाल गैस त्रासदी को विश्व में सबसे बड़ी औद्योगिक प्रदूषण आपदाओं में से एक माना जाता है। भारत के राष्ट्रीय स्वास्थ्य पोर्टल के मुताबिक, वायु प्रदूषण के कारण प्रत्येक वर्ष विश्व स्तर पर लगभग 7 मिलियन से अधिक लोगों की मृत्यु होती है, जिनमें से तकरीबन 4 मिलियन लोगों की मौत घरेलू वायु प्रदूषण के कारण होती है। मौजूदा समय में प्रदूषण स्तर इतना अधिक हो गया है कि विश्व के 10 में से 9 लोगों को स्वच्छ वायु नहीं मलि पाती है।

भारत और अमेरिका बीच बौद्धिक संपदा सहयोग पर समझौता

[उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्द्धन विभाग \(DPIIT\)](#) ने संयुक्त राज्य अमेरिका के पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय (USPTO) के साथ बौद्धिक संपदा के क्षेत्र में सहयोग के लिये एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं। इस समझौते से बौद्धिक संपदा अधिकार के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच उद्योगों, विश्वविद्यालयों, अनुसंधान तथा संस्थाओं के स्तर पर अनुभवों और बेहतरीन तौर-तरीकों तथा ज्ञान को साझा करने में मदद मिलेगी। इस समझौते के माध्यम से कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, IPR के संरक्षण, पेटेंट और औद्योगिक डिज़ाइनों के पंजीकरण एवं परीक्षण हेतु सर्वोत्तम प्रथाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाएगा। यह समझौता वैश्विक नवाचार में एक प्रमुख देश बनने की दशा में भारत की यात्रा के लिये एक महत्वपूर्ण कदम होगा और राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा अधिकार नीति-2016 के उद्देश्यों को आगे बढ़ाएगा।

नौसेना दविस

प्रत्येक वर्ष 4 दिसंबर को भारतीय नौसेना दविस (Indian Navy Day) मनाया जाता है। इस दविस का आयोजन वर्ष 1971 में कराची हार्बर में पाकिस्तान के नौसेना मुख्यालय पर भारतीय नौसेना को आपरेशन ट्राइडेंट (Operation Trident) में मली शानदार कामयाबी की याद में किया जाता है। 4 दिसंबर, 1971 को पाकिस्तान के साथ युद्ध में भारतीय नौसेना ने ऑपरेशन ट्राइडेंट के तहत कराची बंदरगाह पर एक ही रात में पाकिस्तान के तीन जलपोतों को नष्ट कर दिया था। वर्ष 2020 के लिये इस दविस की थीम है- 'भारतीय नौसेना- मुकाबले के लिये तैयार, विश्वसनीय और सामंजस्यपूर्ण'। भारतीय नौसेना का इतिहास वर्ष 1612 में तब शुरू हुआ, जब ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने जहाजों की सुरक्षा के लिये ईस्ट इंडिया कंपनी मरीन (East India Company's Marine) के रूप में नौसैनिक टुकड़ी का गठन किया था। बाद में ईस्ट इंडिया कंपनी मरीन का नाम बदलकर बॉम्बे मरीन (Bombay Marine) कर दिया गया। वर्ष 1892 में इसका नाम रॉयल इंडियन मरीन कर दिया गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1950 में नौसेना का पुनः गठन किया गया और इसे भारतीय नौसेना नाम दिया गया।

वशिव दवियांग दविस

वशिव भर में दवियांगजनों के समक्ष मौजूद चुनौतियों और समस्याओं को रेखांकित करने और उन्हें स्वीकृत प्रदान करने के लिये प्रत्येक वर्ष 03 दिसंबर को वशिव दवियांग दविस के रूप में मनाया जाता है। इस दविस के आयोजन का प्राथमिक उद्देश्य दवियांगजनों से संबंधित मुद्दों और वकिलांग व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों के बारे में आम लोगों के बीच जागरूकता को बढ़ावा देना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 1981 को 'वकिलांगजनों के लिये अंतरराष्ट्रीय वर्ष' घोषित किया था। उसके बाद 1983-92 के दशक को 'वकिलांगजनों के लिये अंतरराष्ट्रीय दशक' घोषित किया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 1992 से प्रत्येक वर्ष 3 दिसंबर को 'वशिव वकिलांगता दविस' के रूप में मनाने की शुरुआत की गई। मौजूदा समय में दवियांगता को अक्षमता के नज़रिये नहीं देखा जाता है और इसका सफल उदाहरण यह है कि आधुनिक युग के सबसे सफल वैज्ञानिकों में से एक स्टीफन हॉकिंग भी दवियांग थे। वर्ष 2001 की जनगणना के मुताबिक, भारत में 21 मिलियन (2.1 प्रतिशत जनसंख्या) से अधिक लोग कर्सी-न-कर्सी प्रकार की दवियांगता से पीड़ित हैं। देश में कुल दवियांगों में 12.6 मिलियन पुरुष और 9.3 मिलियन महिलाएँ हैं।

